15 साहसी इंदिरा

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय सभी स्वतन्त्रता-सेनानी पं० नेहरू के घर आनंद भवन में गुप्त रूप से मिलते थे। अंग्रेज नहीं चाहते थे कि राष्ट्रीय आन्दोलन सफल हो, इसलिए पुलिस नेताओं के घरों पर नजर रखती थी।

एक दिन की बात है। बहुत से राष्ट्रीय नेता पुलिस की आँखों में धूल झोंक आनंद भवन में इकट्ठा हो गए। कई महत्वपूर्ण बातों पर फैसले करने थे। इंदिरा के पिता पं० जवाहर लाल नेहरू ने देखा कि इंदिरा स्कूल जाने की बजाय मीटिंग के कमरे के आसपास मंडरा रही है।

गुस्से से लाल होते हुए वे बाहर आए, ''अभी तुम्हारे स्कूल जाने का समय नहीं हुआ क्या?''

''पापा! अभी तो एक घंटा बाकी है। ''

''तो बाहर जाकर खेलो। यह बच्चों के खेलने की जगह नहीं है। चलो फौरन।''

इस डांट से इंदिरा की आँखों में आँसू आ गए। आँसुओं को रोकते हुए वह बगीचे में जाकर झूले में बैठ गई। गुस्से से उसने जमीन पर पैर मारकर पेंग बढ़ाई। जल्द ही झूला ऊँची पेंगें लेने लगा।

अचानक वह चौंकी। जैसे ही झूला पूरी ऊँचाई पर पहुँचा, उसने देखा कि चहारदीवारी के पास पुलिस वालों का जमघट लगा हुआ है।

वानर सेना की बुद्धि ने उसे कुरेदा - 'खतरा'।

इंदिरा बिना एक पल गँवाए दौड़ती-दौड़ती मीटिंग वाले कमरे का दरवाजा ठेलती अंदर पहुँची।

जवाहर जी को बहुत गुस्सा आया, ''मैंने तुम्हें यहाँ आने से मना किया था.....।''

''पर मुझे आना ही पड़ा पापा। पुलिस ने बंगले को चारों ओर से घेर लिया है।''

बैठे हुए सभी नेता सन्न रह गए। ''हमने तो नई योजना का पूरा खाका तैयार कर लिया है। अगर यह पुलिस के हाथों में पड़ गया तो हमारी सारी योजना धरी-की-धरी रह जाएगी।''

इंदिरा ने शांत भाव से पूछा, ''योजना के कागज कितने हैं?''

''दो-चार कागज हैं।''

''मुझे वे कागज दीजिए। मैं उन्हें यहाँ से बाहर ले जाऊँगी।''

''पर कैसे?''

''वह आप मुझ पर छोड़िए।''

कागजों को उसने झटपट अपने बैग में कॉपियों के बीच रखा। स्कूल ड्रेस पहनकर बैग उठाकर कार में सवार हो गई। कार उसे लेकर स्कूल चल दी।

बाहर पहुँचने पर सिपाही ने कार को रुकने का इशारा किया। ड्राईवर ने कार रोक दी।

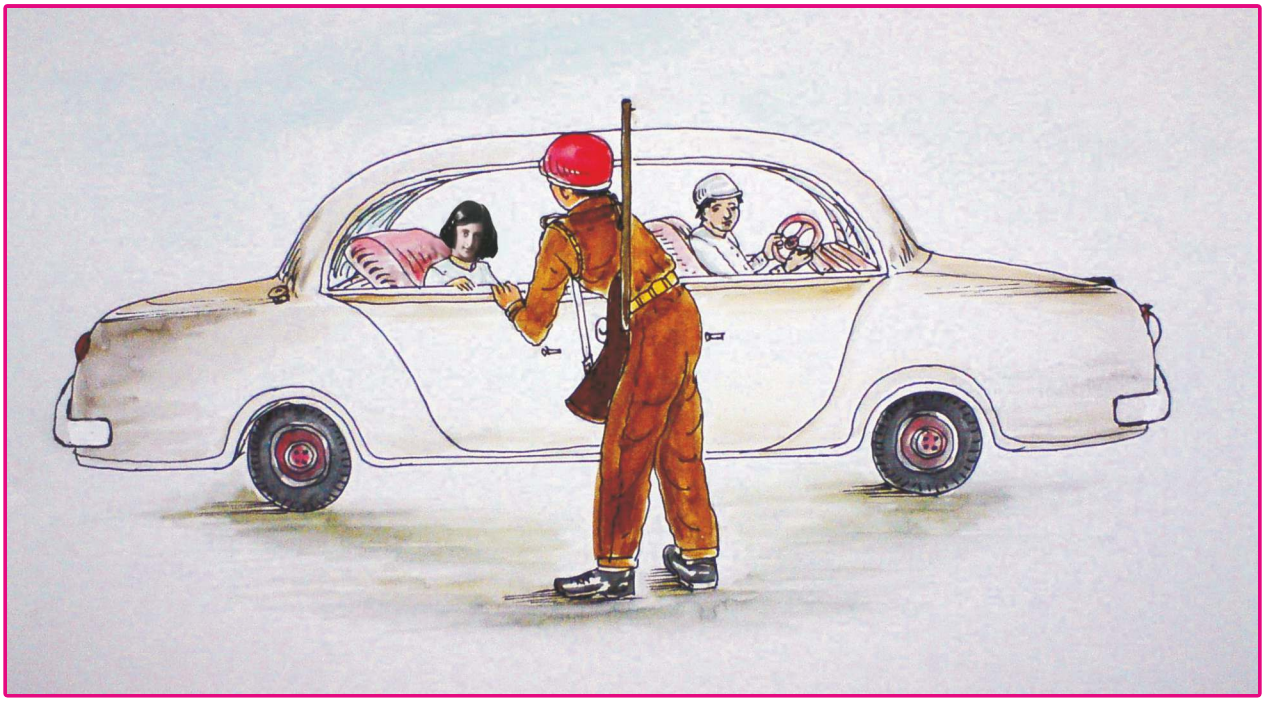

इंदिरा का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। लेकिन वह शांत बनी रही।

''इस बैग में क्या है?'' उसने पूछा।

''मेरी किताबें।''

''यह भी तो हो सकता है कि इसमें हमारे मतलब के कुछ कागज छिपे हुए हों।'' सिपाही ने कहा।

''आप सोचते हैं कि मेरे पिता अपनी लाडली बेटी को इस जोखिम में डालेंगे?'' इंदिरा ने सीधी और कड़ी नजर से सिपाही की ओर देखते हुए पूछा।

''बेबी! मुझे क्षमा करें। कोई भी पिता अपनी नन्हीं बेटी को मुसीबत में नहीं डालेगा। तुम स्कूल जाओ।''

कार चल दी। बाहर पहुँचकर इंदिरा ने तसल्ली की साँस ली। उसे गर्व था कि उसने राष्ट्रीय नेताओं की मदद करके अपनी सच्ची लगन और देशभक्ति का प्रमाण दे दिया था।

-पाठ्यपुस्तक विकास समिति

वानर सेना

इंदिरा जब आपकी उम्र की थी तो उस समय उनकी इच्छा होती थी कि वह भी बड़ों की तरह आजादी की लड़ाई में हिस्सा ले। इसलिए उन्होंने एक वानर सेना का गठन किया जो बड़े लोगों के संदेश पहुँचाने का काम करती थी और बाहर से खबरें लाकर उन तक पहुँचाती थी। अपने जैसे बच्चों को समूह में जोड़कर उन्होंने इसे नाम दिया था – वानर सेना।

शिक्षक संकेत : बच्चों को अन्य स्वतंत्रता सेनानानियों से संबंधित बातें भी बताएँ ।

शब्दार्थ

स्वतंत्रता-सेनानी- आजादी की लड़ाई लड़ने वाले

आनन्द भवन - इलाहाबाद में इंदिरा के पैतृक मकान का नाम

देशभक्ति - देश के लिए लगाव

महत्त्वपूर्ण	-	खास	**जोखिम**	-	खतरा
मीटिंग	-	बैठक	**तसल्ली**	-	आराम
जमघट	-	भीड़	**खाका**	-	रूपरेखा
लाडली	-	प्यारी			

अभ्यास

1. आइए बातचीत करें –

(क) यह कहानी आपको कैसी लगी?

.....

(ख) क्या आप भी इंदिरा की तरह बनना चाहते हैं ? यदि हाँ तो क्यों ?

.....

(ग) इंदिरा का दिल जोर-जोर से क्यों धड़क रहा था?

.....

2. पाठ से बताएँ –

(क) इंदिरा को उसके पिता ने क्यों डाँटा ?

.....

(ख) इंदिरा गुस्से में कहाँ चली गई ?

.....

(ग) इंदिरा ने अपने पिता को क्या सूचना दी ?

.....

(घ) इंदिरा ने सिपाही को क्या कहकर बहला दिया ?

.....

(ङ) इंदिरा ने नेताओं की मदद करके अपने किन-किन गुणों का प्रमाण दिया ?

.....

3. सही (√) / गलत (x) का निशान लगाएँ –

(क) इंदिरा बचपन से ही बहुत साहसी थी। ( )

(ख) चहारदीवारी के बाहर इंदिरा ने लोगों का जमघट देखा। ( )

(ग) योजना के कागजों को इंदिरा ने अपने बैग में कॉपियों के बीच रख लिया। ( )

(घ) सिपाही के पूछने पर इंदिरा कार से उतरकर भाग गई। ( )

(ङ) इंदिरा एक सच्ची देशभक्त थी। ( )

4. इस पाठ में इंदिरा के कौन-कौन से गुण आपको नजर आए। गुण के सामने उन पंक्तियों को लिखें जिनसे वह गुण प्रकट होता है।

गुण	पंक्ति

5. नीचे लिखे वाक्यों को पाठ के अनुसार क्रमबद्ध रूप से लिखें –

(क) ''वे कागज मुझे दे दीजिए। मैं उन्हें यहाँ से बाहर ले जाऊँगी।''

(ख) ''बाहर जाकर खेलो। यह बच्चों के खेलने की जगह नहीं है।''

(ग) ''पर, पापा मुझे आना पड़ा।''

(घ) गुस्से में वह बगीचे में जाकर झूले पर बैठ गई।

(ङ) ''आप सोचते हैं कि मेरे पिता अपनी नन्हीं बेटी को मुसीबत में डालेंगे?''

.....

.....

.....

.....

.....

6. पढ़िए, समझिए और बनाइए –

साहस	–	साहसी	विश्वास	–	
मतलब	–		कागज	–	
शहर	–				

7. इनके विलोम शब्द लिखें –

साहसी	–	शांत	–	डाँटना	–
रुकना	–	राष्ट्रभक्त	–	सच्चा	–

8. **इनसे क्या समझे –**

(क) आँखों में धूल झोंकना .....

(ख) योजना धरी–की–धरी रह जाना .....

(ग) आँखों में आँसू आना .....

(घ) तसल्ली की साँस .....

(ङ) नजर रखना। .....

9. **खाली जगहों को भरें –**

इंदिरा स्कूल जाने की बजाय मीटिंग के कमरे के आसपास ..... रही थी। झूले पर झूलते समय पेंग ऊँची होने पर उसने चहारदीवारी के बाहर ..... वालों का जमघट देखा। उसने इसकी सूचना अपने ..... को दी। योजना के कागज उसने अपने ..... में कॉपियों के बीच रखा। सिपाही इंदिरा से वह कागज ..... ले सका।

10. **इंदिरा गाँधी के अलावा आप किन–किन महिला एवं पुरुष नेताओं के नाम जानते हैं ? लिखें।**

महिला नेता	पुरुष नेता
1.	1.
2.	2.
3.	3.
4.	4.

11. **अपने से बड़ों से पूछकर लिखें –**

इंदिरा जी से रिश्ता	उनके नाम
दादा	
दादी	
पिता	
माँ	